फ्रान्सीसी क्रान्ति

1789 ई0 की फ्रान्स की क्रान्ति आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह क्रान्ति निरंकुश राजतंत्र, सामंती शोषण, वर्गीय विशेषाधिकार तथा प्रजा की भलाई के प्रति शासकों की उदासीनता के विरूद्ध प्रारम्भ हुई थी।

फ्रान्सीसी क्रान्ति के कारण – प्रत्येक क्रान्ति के प्रस्फुटन में कुछ महत्वपूर्ण कारणों का सामुहिक योगदान होता है। क्रान्ति के कारणों की बारूद में अग्नि धीरे–धीरे प्रज्ज्वलित होती है और अन्त में उसमें विस्फोट हो जाता है। फ्रांस की क्रान्ति के विस्फोट के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे–

1– राजनीतिक कारण – क्रान्ति के समय फ्रांस में निरंकुश शासन पद्धति का प्रचलन था। राजा स्वयं को पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानते थे। राजा की इच्छा ही कानून थी। किसी भी व्यक्ति को बन्दीगृह में डालने के लिए किसी प्रकार की न्यायिक जॉच की आवश्यकता नहीं होती थी। राजाओं और सामन्तों की स्वेच्छाचारिता के कारण मुद्रित पत्रों के द्वारा वाल्टेयर और मिराव्यू जैसे महान व्यक्तियों को भी बन्दीगृह भेजा गया। प्रशासनिक व्यवस्था का संचालन दोषपूर्ण था। उसमें भाई–भतीजावाद और पक्षपात का बोलबाला था। विभिन्न कानूनों का प्रचलन अलग–अलग प्रान्तों में अलग था जिसके कारण एक प्रान्त में जो कार्य नियमानुकूल और कानूनी होता था दूसरे प्रान्त में वह गैर–कानूनी समझा जाता था। फ्रान्स के राजा लुई सोलहवॉ और रानी अत्यधिक आरामपसन्द थे। वे अपनी विलासिता पर अत्यधिक व्यय करते थे। सामन्त और दरबारी भी विलासी होते जा रहे थे जिसके कारण शाही दरबार के खर्चे सभी सीमाओं को लांघ गये थे। न्याय व्यवस्था भ्रष्ट थी। न्यायाधीश भारी जुर्माने से अपनी जेबें भरते थे और न्याय खुलेआम बिकता था। जनसाधारण राजा के अनुत्तरदायी भ्रष्ट कार्यों के कारण ऊब चुकी था। इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध लेखक राबर्टसन का मत है कि "लुई 16वें में अब तक मुकुट धारण करने वाले लोगों की तुलना में राजत्व के गुणों का नितान्त अभाव था। वह एक सुस्त, आलसी, निद्राप्रिय और आत्मसन्तुष्ट जीव था जो केवल शिकार,बन्दूक चलाने,बाल संवारने और नाट्यशाला में रुचि रखता था।" राजा लुई 16वें पर उसकी पत्नी मेरी अन्तोयनेत का बहुत बड़ा प्रभाव था जो स्वयं अत्यन्त खर्चीली महिला थी। वह पत्नी के हाथ में कठपुतली के समान था।

2– सामाजिक कारण – क्रान्ति के विस्फोट में सामाजिक कारणों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। समाज में प्रचलित असमानता ने असन्तोष को जन्म दिया और जनसाधारण को प्रेरित किया कि वे वर्तमान सामाजिक ढॉचे के विरुद्ध आवाज उठायें।मुख्य रूप से फ्रान्सीसी समाज दो भागों में बॅटा हुआ था–विशेषाधिकार वर्ग और विशेषाधिकारहीन वर्ग। प्रथम वर्ग के सामन्त,अमीर,जमींदार और उच्च पादरी वर्ग के लोग आते थे जो फ्रान्स की जनसंख्या का केवल एक प्रतिशत भाग थे,फिर भी वे अनेक सुविधाओं और विशेषाधिकारों से परिपूर्ण थे। राज्य के समस्त महत्वपूर्ण पदों पर उनका एकाधिकार था। वे जनसाधारण से अनेक प्रकार के कर वसूल करते थे जबकि ये स्वयं करों से पूर्णतया मुक्त थे। उनके अत्याचारों और शोषण के कारण ही किसानों के हृदय में उनके प्रति घृणा और द्वेश की भावना का उदय हो गया था और वह इनके बन्धन से मुक्त होने की कामना करने लगे थे।

विशेषाधिकारहीन वर्ग स्वयं दो भागों में विभाजित था। इसमें एक मध्यम वर्ग और दूसरा जनसाधारण। मध्यम वर्ग में मुख्यत डॉक्टर,वकील दार्शनिक और प्रोफेसर लोग आते थे जिनके पास शिक्षा,धन व बुद्धि का अद्भुत समन्वय था। इन्होंने व्यापार एवं बौद्धिक क्षेत्र में एकाधिकार स्थापित कर लिया था परन्तु इन्हें किसी प्रकार का विशेषाधिकार नहीं था। इसलिए ये अपनी स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थे। फ्रान्सीसी समाज में सबसे बुरी स्थिति जनसाधारण वर्ग की थी जिसे तृतीय एस्टेट कहा जाता था। इस वर्ग

में कृषक,मजदूर आदि आते थे। इस वर्ग की संख्या बहुत अधिक थी फिर भी इनके जीवन में इतना शोषण व उत्पीड़न जुड़ा हुआ था कि उन्हें पग–पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। न तो उनके पास दो वक्त की रोटी थी और न ही तन ढकने के लिए वस्त्र थे। किसानों को न केवल कर अदा करने पड़ते थे अपितु अनेक बेगारें भी करनी पड़ती थी। कहा जाता है कि फ्रान्स में राजक्रान्ति से पूर्व "अमीर केवल लड़ते हैं, पुजारी पूजा करते हैं और जनसाधारण उनके खर्च उठाने के लिए कर देता है।"

3– आर्थिक कारण – फ्रान्स का उत्तरोत्तर जर्जर होता जा रहा आर्थिक ढॉचा भी क्रान्ति के विस्फोट के लिए बहुत सीमा तक उत्तरदायी था। लुई16वें को युद्धों से विशेष लगाव था और अपने शासनकाल में उसने अनेक युद्धों में भाग लिया था। परिणामस्वरूप ऋण का भार सरकार पर अत्यधिक बढ़ गया था। राजा ने अपनी शानशौकत के लिए वर्साय में एक भव्य महल का निर्माण कराने में अपार धन व्यय किया था। लुई 16वें की असफलता का मुख्य कारण रानी मेरी अन्तोयनेत थी जो अत्यन्त रूपवती,अपव्ययी और जिद्दी थी। उसकी अत्यधिक खर्चीली प्रवृत्ति के कारण वह फ्रान्स में मैडम डेफिसिट के नाम से जानी जाती थी। जब फ्रान्स कर्ज के बोझ के नीचे बुरी तरह दबा हुआ था तब अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए लुई 16वें ने पहले प्रसिद्ध 'पुरुषों की सभा' तथा फिर एस्टेट जनरल को आमन्त्रित किया ताकि वह करारोपण का निश्चय कर सके। दरिद्र किसान अपनी आय का 80 प्रतिशत भाग कर के रूप में पहले से ही अदा कर रहे थे। ऐसी स्थिति में और कर बढ़ाने के लिए एस्टेट जनरल को आमंत्रित करने से ही फ्रान्स में क्रान्ति की ज्वाला भभक उठी। कर की वसूली भी दोषपूर्ण थी। कर अधिकतर ठेकेदारों के द्वारा वसूल किया जाता था जो किसानों से वाजिब धन से अधिक वसूल करते थे किन्तु शाही कोष में उसका कम भाग जमा करके शेष बचा हुआ भाग वह स्वयं हड़प लेते थे। इस प्रकार इन ठेकेदारों के द्वारा जहॉ एक ओर किसानों का शोषण एवं उत्पीड़न किया जाता था वहॉ दूसरी ओर शाही कोष का भी दुरुपयोग किया जाता था।

4– बौद्धिक कारण – फ्रान्स की राजक्रान्ति का मार्ग प्रशस्त करने में लेखकों की प्रमुख रही। जब फ्रान्स की राजनीतिक,सामाजिक एवं आर्थिक दशा पतनोन्मुख हो रही थी उस समय सब प्रकार के लेखकों ने अपने लेखों एवं भाषणों के द्वारा मृतप्राय जनसाधारण में एक नवजीवन फूॅक दिया। उन्होंने केवल प्रचलित सामाजिक व्यवस्था पर ही कुठाराघात नहीं किया अपितु चर्च से सम्बन्धित समस्त कुरीतियों एवं बुराइयों के प्रति भी असंतोष और नाराजगी प्रकट किया। तत्कालीन प्रसिद्ध बौद्धिक प्रतिभाओं में मोन्टेस्क्यू,बाल्टेयर और रूसो के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मान्टेस्क्यू ने राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि न मानते हुए जनता का प्रतिनिधि घोषित किया। वह एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना का इच्छुक था जिसके अर्न्तगत वह लोगों के अधिकारों एवं स्वतंत्रता की रक्षा कर सके। उसकी विचारधारा का पूरा प्रतिबिम्ब उसके द्वारा रचित पुस्तक 'कानून की आत्मा' में स्पष्ट दिखायी पड़ता है। दूसरा प्रसिद्ध विद्वान लेखक वाल्टेयर था जो लेखक होने के साथ कवि,दार्शनिक,व्यंगकार,आलोचक व पत्रकार भी था। उसने अपनी लेखनी के द्वारा राज्य,चर्च एवं सामाजिक कुरातियों पर निरन्तर प्रहार किये।फ्रान्स की क्रान्ति के प्रेरक विद्वानों में रूसो का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। अपने दार्शनिक विचारों के कारण वह इतना प्रसिद्ध हो गया था कि नेपोलियन महान जैसे व्यक्तियों की यह धारणा बन गयी थी कि यदि रूसो न हुआ होता तो फ्रान्स की राजक्रान्ति भी नहीं होती। उसके द्वारा रचित ग्रन्थ 'सोशल कॉन्टेक्ट' का प्रारम्भिक वाक्य–"मनुष्य स्वतंत्र उत्पन्न हुआ है परन्तु सर्वत्र श्रंखलाओं में जकड़ा हुआ है।" वास्तव में फ्रान्स की क्रान्ति पर सबसे अधिक प्रभाव रूसो के विचारों का ही पड़ा था।

फ्रान्सीसी क्रान्ति के परिणाम – जिस प्रकार एक तालाब में कंकड़ फेंके जाने से उसकी लहरें सारे तालाब के पानी में फैल जाती है,उसी प्रकार से फ्रान्स की 1789 ई0 की राजक्रान्ति के परिणामों ने समस्त यूरोप को हिला दिया था और इस कहावत को चरितार्थ कर दिया कि "जब फ्रान्स को जुकाम होता है तब सम्पूर्ण यूरोप छींकने लगता

है।" वास्तव में इस क्रान्ति ने यूरोप ही नहीं पूरे विश्व का प्रभावित किया। संक्षेप में फ्रान्स की क्रान्ति के परिणामों को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है–

1– राजनीतिक परिणाम – फ्रान्स की क्रान्ति के कारण जनसाधारण को स्वतंत्रता,समानता और भ्रातृत्व के रूप में ऐसे उद्घोष प्राप्त हुए जो आगे चलकर क्रान्ति के प्रमुख सिद्धान्त स्वीकार किये गये। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर जनसाधारण ने विशेषाधिकारयुक्त वर्ग के अन्यायों,राजाओं की निरंकुशता एवं मुद्रित पत्रों का विरोध किया और फ्रान्स में क्रान्ति के इन तीन प्रमुख सिद्धान्तों को अक्षरशः प्रतिस्थापित करने का निरंकुश शासक जनसाधारण पर अपने आपको ईश्वर का प्रतिनिधि कहकर मनमाने अत्याचार करते व उसका शोषण करते थे,धीरे–धीरे लुप्त हो गया।फ्रान्स की क्रान्ति के दौरान राजा,रानी व राजपरिवार के सदस्यों को गुलेटिन पर चढ़ा कर जनसाधारण ने यह सिद्ध कर दिया कि राजा ईश्वर का प्रतिबिम्ब न होकर जनता का प्रतिनिधि है और उसे स्वेच्छाचारिता की बजाय जनसाधारण के कल्याण को दृष्टि में रखकर ही कार्य करना चाहिए। क्रान्ति के परिणामस्वरूप फ्रान्स की प्रान्तीय शासन–व्यवस्था में कई महत्वपूर्ण सुधार किये गये। सेना का पुनर्गठन किया गया और प्रशासन में विद्यमान भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया गया।

2– आर्थिक परिणाम – फ्रान्स की क्रान्ति के दौरान बूर्बो शासकों की प्रशासकीय अयोग्यता के कारण देश की आर्थिक व्यवस्था अत्यन्त जर्जर हो गयी थी और फ्रान्स आर्थिक रूप से दिवालियेपन के कगार पर खड़ा था।क्रान्ति के परिणामस्वरूप समान रूप से सभी वर्गों पर कर लगाये जाने की परम्परा को मान्यता प्रदान की गयी और 'प्रसिद्ध पुरुषों की सभा' व एस्टेट जनरल के अधिवेशन बुलाये गये।देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए विभिन्न अर्थमन्त्रियों को भी नियुक्त किया गया था किन्तु उनकी असफलता ने सभी वर्गों पर समान कर प्रणाली के सिद्धान्त को पुष्ट कर दिया।ठेके पर कर की वसूली की प्रथा को बन्द कर दिया गया। समानता के सिद्धान्त के मान्य हो जाने के कारण बेगार प्रथा एवं अन्य अमानुशिक परम्पराएँ धीरे–धीरे समाप्त हो गयीं। नेपोलियन के सैनिक शासन में लोगों को स्वतन्त्रता का अधिकार भले ही नहीं दिया गया,किन्तु समानता प्रदान करने का उसने हर सम्भव प्रयास किया।

3– सामाजिक परिणाम – फ्रान्सीसी समाज मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित था।प्रथम,विशेषाधिकार वर्ग जो अनेक अधिकारों का उपयोग करके भी सभी करों से मुक्त था,द्वितीय विशेषाधिकारहीन वर्ग,जो आय का 80 प्रतिशत कर के रूप में देने के बाद भी शोषित और प्रताड़ित किया जाता था। क्रान्ति के परिणामस्वरूप समानता के अधिकार को मान्यता प्राप्त हो जाने से राज्य की आर्थिक व्यवस्था सबल हुई तथा सभी वर्गों में सौहार्द्र एवं प्रेम की भावना का संचार हुआ। मध्यम वर्ग जो बुद्धिमान व धनसम्पन्न था,विशेषाधिकारों से वंचित होने के कारण अत्यन्त असन्तुष्ट था।क्रान्ति के परिणामस्वरूप उच्च वर्ग के लोगों के विशेषाधिकारों की समाप्ति से उन्हें अत्यधिक सन्तोष हुआ। निम्न वर्ग की स्थिति में सुधार हुआ। समानता और स्वतन्त्रता के सिद्धान्त के कारण निम्न वर्ग का शोषण कम हो गया और वे बेगार आदि कई कष्टदायक दायित्वों से मुक्त हो गये।

4– धार्मिक परिणाम – फ्रान्स का धार्मिक वर्ग दो भागों में विभाजित था। बड़े पादरी विलासी व धनी थे किन्तु छोटे पादरी कर्तव्यपरायण व निर्धन थे। क्रान्ति के परिणामस्वरूप असन्तुष्ट छोटे पादरियों ने बड़े पादरियों का साथ न देकर जनसाधारण के साथ सहयोग किया और क्रान्ति को अवश्यम्भावी बना दिया। बड़े पादरियों के आरामपूर्ण एवं विलासी जीवन के विरुद्ध होने वाली प्रतिक्रिया से उन्हें विशेष प्रसन्नता हुई। साथ ही बड़े पादरियों के विशेषाधिकारों के छिन जाने के कारण अब उनका समाज में अधिक महत्व नहीं रह गया था। क्रान्ति से पूर्व बड़े पादरी जनसाधारण का खुलकर शोषण करते थे,उनसे बेगार लेते थे और उनसे तरह–तरह के कर वसूल करके अपने खजानों को भरते रहते थे परन्तु क्रान्ति के परिणामस्चरूप उनके ये सभी विशेषाधिकार समाप्त हो गये थे

और अब वे किसानों,मजदूरों व जनसाधारण का पहले के समान शोषण नहीं कर सकते थे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि फ्रान्स की क्रान्ति के प्रभाव अत्यन्त व्यापक हुए। यूरोप के विभिन्न देशों के साथ–साथ अमेरिका व भारत भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे।रैम्जे म्योर का यह मत उचित ही प्रतीत होता है कि यह एक विश्वक्रान्ति थी जिसने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।

प्र01– फ्रान्स की क्रान्ति के कारणों का वर्णन कीजिए।

प्र02– फ्रान्स की क्रान्ति के सामाजिक व राजनीतिक कारणों की व्याख्या कीजिए।

प्र03– फ्रान्स की क्रान्ति के परिणामों पर प्रकाश डालिए।

सन्दर्भ – डॉ0 के0एल0खुराना एवं डॉ0आर0सी0शर्मा की पुस्तक 'विश्व का इतिहास'।

प्रस्तुतकर्ता
चन्दन सिंह डसीला
स0अ0,एल0टी0
रा0उ0मा0वि0 खतीगॉव